[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3632

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारतीय लोक संस्कृति और रंग

डॉ. संगीता शर्मा
सहायक प्राध्यापक
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, किला भवन, इंदौर

मानव के पास संस्कृति है इसीलिए वह पशु से अलग है। भर्तृहरि ने माना है –

"साहित्य संगीत कला विहीनः
साक्षात् पशु पुच्छ विषाण हीनः।।"

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – "लोक शब्द का अर्थ जनपद या गाँव नहीं बल्कि नगरों व गाँवों मे फैली वह समूची जनता है जिसका आधार पोथियाँ नहीं, अकृत्रिम और सरल जीवन व्यतीत करने वाले जन है।"
लोक संस्कृति का अहम भाग है लोक कला। यह संस्कृति का पहचान है जहाँ तक भारतीय लोक संस्कृति की बात है इसमें लोक कला का विषेष महत्व है। कला का प्रयोजन अभिव्यक्ति, यष प्राप्ति, धनोपार्जन, सेवा, आनंद की प्राप्ति, विष्व कल्याण आदि हो सकते है।

भौगोलिक स्थितियाँ लोक चित्रों के रंग संयोजन को प्रभावित करती हैं। भोपाल व होषंगाबाद के मध्य ओबेदुल्लागंज के दक्षिण में स्थित भीमबेटका की गुफाओं में अधिकांषः चित्रित गुफाएं मध्य पाषाण काल की है। इनमें अधिकतर चित्र लाल व सफेद रंग के हैं। इनके अलावा कुछ चित्र पीले व हरे रंगों के भी है। यहाँ के भूगर्भीय जमाव में पाए गए पदार्थों से बनाए गए रंग उस काल की भौगोलिक स्थिति व उस काल की लोक संस्कृति के सहसंबंध को स्पष्ट करते हैं। वहाँ के अधिकांष चित्र मध्य पाषाण काल के हैं। इनमें चित्रित लोक संस्कृति के प्रतीक पशु–पक्षी उस काल की सामाजिक स्थिति का दृष्यांकन है। इनमें नृत्य, वेषभूषा, आभूषण, माता–पुत्र, मद्यपान, आखेट, सामूहिक नृत्य आदि के भी चित्र है। इन शैल चित्रों के माध्यम से लोक संस्कृति के सोपानों को भी जाना जा सकता है।

लोक संस्कृति में चित्रों की प्राचीनता भाषा से भी प्राचीन है। लोक संस्कृति में विभिन्न रंगों को प्रयोग हुआ। ये रंग मानव मन की भावनाओं को भी व्यक्त करते है। जैसे– पीला रंग प्रसन्नता दायक, यष, दिव्यता, सूर्य प्रकाष आदि का प्रतीक है। लाल रंग सर्वाधिक उत्तेजक व आकर्षक है, सक्रिय और आक्रामक है, साथ ही यह रंग स्त्रियों में भी लोकप्रिय है। नीला रंग शांति, माधुर्य, ईमानदारी, आषा और लगन का प्रतीक है। हरा रंग तटस्थ व ताजगी का प्रतीक है। बैंगनी रंग राजसी रंग है। समृद्धि, वैभव व शौर्य का प्रतीक है। सफेद रंग पवित्रता, स्वच्छता, शांति और तेजस्विता का प्रतीक है। काला रंग प्रकाषहीन, उत्तेजनाहीन, शोक, भय पाप, निराषा का प्रतीक है।

इस प्रकार रंगों का संयोजन विविधता में एकता को दर्षाता है मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के अनुसार कुछ रंग जैसे लाल उत्तेजक होते है। मेहंदी, महावर से लाल रंग प्रसन्नता के प्रतीक है। हरी–लाल चूड़ियाँ लोक संस्कृति में सौभाग्य का प्रतीक मानी जाती है।

इस प्रकार लोक संस्कृति में कला मानव की सहचरी के रूप में सदा साथ रही है।
प्रख्यात इतिहासकार एम.सी. वर्किट ने लिखा है कि – "किसी देष अथवा जाति की संस्कृति के विकास का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए उस संस्कृति की कला को जानना आवष्यक है। इसी के माध्यम से उस काल की सभ्यता, संस्कृति को जाना जा सकता है।"

एम.सी. वर्किट ने यथार्थ ही लिखा है क्योंकि हड़प्पा व मोहन जोदड़ो के कलावषेषों से उस काल की संस्कृति के उच्च स्तर का अनुमान लगाया गया है। आज भी जहाँ कहीं पुरावषेष मिलते हैं जैसे छत्तीसगढ़ के सिरपुर आदि स्थानों पर उनसे भी उस काल की कला का अनुमान लगाया जाता है।

लोक संस्कृति का अभिन्न अंग है – धर्म। लोक कला में धार्मिक के साथ उल्लास का भाव भी महत्वपूर्ण है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

लीला गुदवाने (टेटू) की प्रथा भी लोक संस्कृति का ही एक भाग है। इसमें शरीर पर नीले रंग विभिन्न प्रकार के चित्र गुदवाए जाते है। ये जीवन पर्यन्त बने रहते है। पौराणिक कथाओं में भी श्रीकृष्ण द्वारा लीला गोदने वाले का रूप धारण करने का उल्लेख है। मिट्टी के बर्तनों पर भी सुंदर रंग बिरंगे चित्र उकेरना लोक संस्कृति का अहम् हिस्सा है।

वर्तमान में भारतीय लोक कला अंतर्राष्ट्रीय पटल पर स्थापित होकर लोकप्रिय हो चुकी है क्योंकि भारतीय संस्कृति में अनेकता में एकता के साथ आध्यात्मिकता के भाव भी जुड़े है। इसमें सदैव से मानव कल्याण का भाव भी है। सर्वे भवन्तु सुखिनः का भाव लोक संस्कृति का आधार है।

भारतीय संस्कृति मूलतः आध्यात्मिक है। आध्यात्मिकता में सफेद रंग विषेष महत्व होता है। जैसा कि बताया जा चुका है यह पवित्रता और शांति का प्रतीक है भारतीय संस्कृति में अध्यात्म के साथ उत्सवधर्मिता को भी सम्मिलित किया गया है। इसी कारण प्रसन्नतादायक पीले रंग को हिंदू लोक संस्कृति में विषेष स्थान दिया गया है।

बिहार की लोक संस्कृति में 'अहपन' लोक कला विषेष महत्व रखती है। नारी परिवार के पुरूषों की मंगलकामना के लिए चित्र कृतियों में देवीय शक्ति की कल्पना कर पूजन करती है। ये आकृतियाँ लोक चित्रकारी की श्रेणी में आती है। ये चित्र अलौकिक आकर्षण युक्त होते है, इनमें रंगों का संयोजन पृष्ठभूमि के अनुसार किया जाता है।

इस प्रकार भारतीय लोक संस्कृति में रंगों का संयोजन मानव के मनोभावों के अनुरूप उल्लास, अध्यात्म की सहज अभिव्यक्ति है जो चित्रों में अभिव्यक्त हुआ है।

संदर्भ –

1 *हजारी प्रसाद द्विवेदी – एम.सी. वर्किट – भारतीय चित्रकला का इतिहास*
2 *एम.सी. वर्किट – भारतीय चित्रकला का इतिहास*